॥ श्रीः ॥

मार्कण्डेयसंहितान्तर्गत

॥ श्रीजानकीनवरत्नमाणिक्यस्तव ॥

भाषाटीका सहित ।

श्री ५ सीताराम शरण भगवानप्रसादजी रूप कलाकुंज अवधके आज्ञानुसार श्री ५ पण्डित बिश्वनाथ चौबे मुकाम बाढ़ निवासी की सहायतासे

श्री अवध निवासी वैष्णववर श्री १०८ माखनदास परमहंसजी महाराज के शिष्य

श्रीजनकनन्दिनी शरण युगेश्वरप्रसाद वकील जिला (पटना) मुकाम बाढ़ निवासी ने टीका बनाई ।

प्रिन्टर—ठाकुरप्रसाद मिश्र द्वारा "सत्यसुधाकर" प्रेस पटना सिटी में मुद्रित ।

प्रथमबार १०००]   दाम ।)   [सन १९१२ साल

सूचना

प्रियपाठकगण !

आज आपकी सेवामें यह अपूर्व श्री किशोरीजीकी स्तुति ध्यानसूचक बिख्यात श्रीमार्कंडेय संहितामे है सरल भाषा टीकासेभूषित समर्पित करताहूं । श्रीवैष्णव सम्प्रदाय वालोंके लिये इससे अधिक उपयोगी दसरा कोइ स्तोत्र नही है । श्रीजानकीस्तवराज में स्वयं श्रीरामचन्द्रजीने श्रीमहादेवजी से कहा है " द्रष्टुमिच्छसि यद्रूपंमदीयं भावना स्पदम् । आल्हादिनीं परांशक्तिं स्तुयाः सात्वत सम्मताम्॥७॥ तदाराध्य स्तदा राम स्तदधीन स्तयाविना । तिष्ठामि नक्षणं शम्भोजीवनं परमंमम ॥८॥" य सातवां आठवां श्लोक श्रीजानकीस्तवराजकेहैं-अर्थ श्रीरामजी कहते है कि हे महादेवजी यदिआप हमारे स्वरूपका दर्शन किया चाहतेहैं तो श्रीसीताजी जो सबअच्छे लोगों से पूजित् और परमशक्ति हैं उनकी स्तुति कीजिये ॥ ७ ॥ आठमें श्लोक में श्रीरामजी कहते है कि श्री किशोरीजी ऐसीहैं कि जिनका ध्यान हम खुदही करते हैं श्रीकिशोरीजी सेही हमको आराम है उनकेहम आधीन हैं श्रीजानकीजी के बिना हे महादेवजी एक क्षण भीहम नही ठहर सक्ते हैं श्रीकिशोरीही जो हमारे सुन्दर जीवनके आधारहैं ॥ ८ ॥ श्रीरामजी का बशीकरण मंत्र श्रीजानकी जीका स्तुति करना है ऐसे परम पवित्र स्तोत्र का पाठ करना श्रीमद्रामोपासकों के लिय अत्यन्त कल्याणकारकिहै

आपलोगों का शुभचिंतक

जनकनन्दिनीशरण ।

युगेश्वरप्रसाद वकील

१९-१-१९१३ **बाढ़-जिला (पटना)**

श्रीमार्कंडेयसंहितायां श्रीजानकीनवरत्न माणिक्यस्तवप्रारम्भः ।

श्रीगणेशायनमः ॥ ब्रह्मोवाच ॥

हेमाभामर विन्द सुन्दरदृशां सौन्दर्य्य सद्वैभवां मंदंमंदमनोहरस्मितमुखींमंदारमालान्विताम् ॥ कुन्देंदीवरपाटलैस्सुरभितां वृन्दारकैर्वन्दिताम् वन्देराघवसुन्दरीम् त्रिभुवनैकानन्ददीपांकुराम् ।१

टी०–हेमाभां [सुवर्णवर्णां–सोनेके रंगका रंग श्री किसोरी जी का है] अरविन्दसुन्दरदृशां [कमलवत् रुचिरनयनां–कमलके ऐसा सुन्दर दोंनों आंखहै] सौन्दर्य्यसद्वैभवाम् [सुन्दरताभिः पुनः उत्तमविभवैर्युक्ताम्-श्रीकिशोरीजी कैसीहै कि सुन्दरता और उत्तम२ गुणों करके युक्त हैं] मन्द मन्द मनोहरस्मितमुखीं [किञ्चित् २ मनोहरस्मित मुखारबिन्दाम्—श्रीकिशोरीजी का मुख कमल कैसा है कि थोड़ा २ मुस्कुरा रहीं हैं और मुसकुराना उनका मनको हरन करनेवाला है)

मन्दारमालान्विताम् [पारिजात पुष्पमालया युक्ताम् पारिजात फूलका माला पहिरे हुई हैं] कुन्द [उजला फूल] इन्दीबर [लाल, कमल] पाटल [एक तरह का फूल होता है] इन तीनों फूलके गन्धसे युक्त] सुरभितां [सुगन्धयुक्त है श्रीकिशोरीजी] बन्दारकैः बन्दिताम् [देवताभिः नमस्कृताम्–देवता लोग जिनको नमस्कार करते हैं] राघव सुन्दरीम् [श्रीरामचन्द्रस्यमहिषीं— श्रीरामचन्द्रकी प्रिया है बन्दे [नमामि ऐसी श्री किशोरीजीको हम नमस्कार करते हैं] ॥१॥

शृङ्गारार्णवमङ्गलांगरुचिरंश्रीमत्कपोळांचिते
राजद्रत्नकिरीटकुंडळधरेमंदस्मितोल्लासिते
काञ्चीनूपुरकङ्कणक्कणक्कणत्कारैरवैर्मोहने
अम्बत्वच्चरणाम्बुजद्वयमहंसांचिंतयेमानसे
॥ २ ॥

टी० शृङ्गारार्णव [शृंगार नाम शोभाके समुद्र मंगलांगरुचिरं [मंगल अंग श्रीकिशोरीजीका रुचिर नाम सुन्दर है] श्रीमत् [शोभायुक्त] कपोल [गाल श्रीकिशोरीजी का] अञ्चित

[अलंकृत-शृंगारसे पूर्ण] राजत् [प्रकाशमान] किरीट [मुकुट] कुण्डल [कानका कुण्डल] धरे [धारन करनेवाली हे श्रीकिशोरीजी] मंदस्मित [थोड़ा २ आप मुस्कुरा रहीं है इससे] उल्लासिते [आप प्रकाशमान हैं] हे श्रीकिशोरीजी आप कैसी हैं कि अपने काञ्ची [करधनी] नूपुर [पायजेब] कंकन और कँगना] यह तीनों जेवर कैसा है कि क्वणक्वणत्कार [शब्दायमान झुनझुन बोलनेवाला] उस्के रव नाम शब्द से [मोहने] आप जगत् को मोहनेवाली हैं] हे अम्ब [हे माता] त्वत् [आपके] द्वयचरणाम्बुजम् [दोनों चरन कमल] मानसे [मनमें अहं [हम] संचितये [ध्यान करते हैं] ॥२॥

मातस्त्वदंघ्रिकमलद्वयगन्धमत्त
योगिन्द्रवृन्दमुनिसिद्धसुरासुराद्याः॥
सिद्धिङ्गतास्त्रिभुवनैकमहाविभूते
तस्माद्भजेहमनिशंरघुवीरकान्ते ॥ ३ ॥

टी० हे मातः [हे माता] त्वत् [आपका] द्वय (दोनों) अंघ्री (चरण) कमलके गन्धसे

योगिन्द्र बृन्द (योगी लोगोंके समूह) मुनि (मुनिलोग) सिद्ध (सिद्धलोग) सुर (देवता-लोग) असुराद्याः (राक्षस वगैरह) सिद्धिंगताः (सिद्धि प्राप्त किया है) हे त्रिभुन एक महाविभूते [हे तीनों लोकमें एक आपहीकी बिभूति ऐश्वर्य बड़ी है) हे रघुबीर कान्ते (हे श्रीरामचन्द्रकी प्रिया) तस्मात् [इसलिये] अहं (हम) अनिशं [निरन्तरं हमेशे] भजे [भजते हैं] ॥ ३ ॥

ब्रह्मादिदेवगणरत्नकिरीटकोटि
संसेवितांघ्रिकमलेकमलाधिवासे ॥
आनन्दकन्दलहरीशुभमन्दहासे
अम्वप्रसीदरघुनन्दपट्टकान्ते ॥ ४ ॥

टी० हे रघुनन्दन पट्टकान्ते ! [हे श्रीरामचन्द्रजीकी पटरानी] हे अम्व [हे माता] हे कमलाधिवासे [कमलेअधिवासो यस्याः—कमलमें बिशेष बास है जिनका] प्रसीद [प्रसन्न हो] आप कैसी हैं कि ब्रह्मादि देवगण [ब्रह्मादिक देवताके समूह] उन लोगोंका रत्न किरीट [रत्न--मणियोंका बना हुवा जो मुकुट] उसका

कोटि [अग्रभाग] से आपका अंघ्री कमले [चरण कमल] सं सेवितास् [सम्यक् प्रकारसे पूजित है] अर्थात् सब देबताओंका मस्तक मुकुट सहित आपके चरण कमल पर गिरता है, आप का मन्दहास [थोड़ा २ मुस्कुराना जो है] सोइ आनन्दकन्द (आनन्दकी मूल) लहरी नाम प्रवाह है ॥ ४ ॥

मन्दारपुष्परमणीयविशालशोभे
माणिक्यमण्डपसुमौक्तिकपीठसंस्थे ॥
अर्द्धेन्दुसुन्दरकीरीटविराजमाने
देविप्रसीदरघुनन्दवल्लभेमाम् ॥ ५ ॥

टी० हे देवि ! हे रघुनन्दन बल्लभे ! [हे राम-चन्द्रजीकी प्रिये] मां [हम पर] प्रसीद [प्रसन्न हो] आप कैसी हैं कि मन्दार [पारिजात] पुष्प 'फूल' रमणीय 'सुन्दर' विशाल शोभे उससे आप विशाल शोभे [अत्यन्त शोभा पाती हैं) आप माणिकके मण्डपमें सुमौक्तिक पीठ 'सुन्दर मोतीके आसन पर संस्थे 'विराजमान हैं' अर्द्धेन्दु [आधा चन्द्रमाके ऐसा] सुंदर

किरीट [सुन्दर मुकुट] विराज माने [विराज-मान है मस्तक पर आपके ॥ ५ ॥

परदेवतेतिफणिराजशयाङ्गनेति
आधारमूलनिलयेतिजगन्मयेति ॥
जानन्तियांचमुनयोभुवनैकपूज्यां
सात्वंप्रसीदरघुनन्दनवल्लभेमां ॥ ६ ॥

टी० परदेवतेति [हे श्री किशोरीजी आप परा उत्कृष्टा देवता हैं-अर्थात् सब देवताओंके सिरताज हैं] पुनः आप फणिराज शयाङ्गना है [फणि-राज—शेषजी पर शय नाम सोनेवाले जो विष्णु भगवान उनके आप अङ्गना नाम स्त्री हैं] फिर आप कैसी हैं कि आधारमूल [हृदयमें षट चक्र है उसमें एक चक्रका नाम है आधारमूल तब हे श्री किशोरीजी आप उस चक्रमें बास करनेवाली हैं] निलयेति [आप बास करनेवाली हैं] जगन्मयेति । जगतमय नाम जगत स्वरूप आप हैं । च फिर जिन आपको मुनयोः । मुनी-लोग । भूवने । चौदहौं भुवनमें । एक पूज्यां सबसे बढ़के श्रेष्ठ । जानन्ति । जानते हैं । सात्वं

वह आप । हे रघुनंदन वल्लभे (हे श्रीरामजीकी प्रिये ! मां । हम पर प्रसीद । प्रसन्न हो ॥ ६ ॥

वर्णत्रयेतिभुवनत्रयमोहिनीति
वागीश्वरीतिवसुधाधरकन्यकेति ॥
कमलालयेतिकवयस्सततंभजन्ति
अम्बत्वदीयमहिमांगणयेन्नशेषः ॥ ७

टी० हे अम्ब (हे माता) त्वदीय (आपका) महिमां (प्रताप) शेषः (श्रीशेष भगवान) न (नहिं) गणयेत् (वर्णन कर सक्ते हैं) आप कैसी है तो बर्ण त्रय (ओं) हैं फिर भुवनत्रय मोहिनी ' तीनों भुवनको मोहलेने वाली हैं ' फिर वागीश्वरी ' बाणीके मालकिनी अर्थात् सरस्वती रूपा हैं ' फिर वसुधाधर कन्यकेति ' हिमाचलकी कन्या पार्वती हैं ' कमलालयेति ' कमलमें वास हैं आपका । कवयः ' पण्डितलोग । आपको सततं ' हमेशे । भजन्ति ' भजते हैं ॥ ७ ॥

रामप्रियेश्वरमयेभुवनैकवन्द्ये
कामारिसेवितविराजितपादपद्मे ॥
चामीकरद्युतिनिभेशतपत्रहस्ते

रामाङ्कपीठनिलयेममसन्निधत्ताम् ८॥

टी० हे रामप्रिय ! ' हे श्रीरामजीकी प्यारी, आप ईश्वरमये ' ईश्वर रूपहीं हैं । भुवनैकवन्द्ये 'आप चौदहों भुवनमें एकहीं पूजनीय हैं। कामारि ' महादेवजीसे सेवित ' पूजित ' पादपद्मे ' चरन कमल ' विराजित ' शोभित हैं । चामीकर ' सोना । के द्युति ' प्रकाश । के निभे ' तुल्य सदृश । आप हैं हे शतपत्र हस्ते ' हे श्री किशोरीजी आपका हाथ शतपत्र नाम कमलवत् है । हे रामाङ्कपीठ निलये ' हे श्रीकिशोरीजी आप कैसी हैं कि श्रीरामजीके गोदमें बैठनेवाली हैं । ऐसे जो आप हैं सो ममसन्निधत्ताम् ' मेरे सामने होइए ॥ ८ ॥

सौंदर्य्यसारनवमोहनमंगलांगे
श्रीमत्कटाक्षकरुणामृतपूर्णसंगे ।
श्रीरामचन्द्रशुभवक्षसिनित्यवासे
क्षीराब्धिराजतनयेममसन्निधत्ताम्॥९

टी० हे क्षीराब्धिराजतनये [हे क्षीरसागर की लड़की लक्ष्मीजी] ममसन्निधत्ताम्] मेरे सामने

होइए] आप कैसी हैं सौदर्य्यसार नव मोहन मंगलांगे [आपका मंगल अङ्ग कैसा है कि सुन्दरताका हीर मूल है वही नया मोहनेवाला जगत्का है] फिर श्रीमत् [शोभायमान] कटाक्ष [ताकना] आपका करूणामृत [दयाके अमृत] उससे पूर्ण संगे [नाम आपके नजरको दयारूपी अमृतसे पूर्ण संग है नाम पूरा संगत है अर्थात् आपके नजर मे दया भरा हुआ हैं] फिर श्री रामचन्द्रके शुभवक्षसि [सुन्दर छातीमें] आप का नित्यवासे [हमेशे रहना है ॥ ९ ॥

सिंजन्निनादमणिनूपुरपादपद्मे
मञ्जीरमञ्जुमणिकुण्डलमण्डितांगे ।
कञ्जातचारुनयनेकरुणाम्बुवाहे
अम्बप्रसीदरघुनन्दनवल्लभेमाम् ।१०।

टी० हे अम्ब [हे माता] हे रघुनन्दनवल्लभे हे श्रीरामजीकी प्रिया] माम् [हम पर] प्रसीद (प्रसन्न होइए] आप कैसी हैं कि पाद पद्मे [चरण कमलमें आपके] सिंजन्निनाद [गहने का खनखनाहट का जो नाद नाम शब्द] उस

शब्दके युक्त जो आपका मणियों से बना हुआ नूपुर पायजेब है सो आपके चरण कमलमें है फिर आप कैसी हैं कि अङ्ग [देहमें आपके] कैसा है देह आपका किमंजु [कोमल है] मंजीर करधनी और मणी जड़ा हुआ कुण्डल सो मंडित [शोभित है] फिर कंजात [कमलवत्] चारु [सुंदर] नयन [आंख] आपका मानो करुना [दया रूपी] अम्वु [जल] का वाहे [धारा] है १०

पद्मेपद्मासनस्थेपरिमलभरिते वालार्क कोटिद्युते । पद्मालंकृतहस्तपद्मयुगलेप द्मालयेपद्मिनि ॥ पद्मोल्लासविलासशोभि नयने पद्मप्रियेपावने। पद्मेराममनोहरे हरिहर ब्रह्मादिपीतस्तने ॥ ११ ॥

टी० हे पद्मो (लक्ष्मीजी) आप कैसी हैं कि पद्मासनस्थे (कमलमें बास है आपका) परिमल भरिते (सुगंधसे पूरणहैं आप) फिरआप कैसी है तो बालार्क कोटिद्युते (करोडों प्रातःकाल के सूर्य्यके ऐसा प्रकाश है आपमें प्रातःकाल के सूर्य्यमें कडापन गरमी नहींहोती) हस्तपद्मयुगले

(दोनों हाथआपका जो कमल के ऐसा है) पद्मालंकृत (नामकमलसे अलंकृतहै अर्थात दोनों हाथमें आपके कमलका फूल है) फिर आप पद्मालय (कमलमें बास करनेवाली हैं) पद्मिनिं (कमलवाली हैं) फिरआप कैसी हैं शोभिनयने सुन्दरजो दोनों आंख आपका हैं सो नेत्र दोनों आपके पद्मोल्लास बिलास खिले हुए कमल के ऐसे बडे२ सुन्दरहैं फिर आप पद्मप्रिय कमल प्यारा है आपको और आप पावन पवित्र हैं, हे पद्मे (हे कमले श्री किसोरीजी) आप राम मनोहरे (श्रीरामचन्द्रजी के मनको हरनेवालीहैं फिर आप कैसी हैं ब्रह्माविष्णु महेश तीनोंने आप का स्तन पानकियाहै) आप ऐसे अनादिहै ॥११॥

तप्ताष्टापदभांविदेहतनयांरामांकपीठस्थितां । तस्यप्रेक्षणतत्परामनिमिषांहस्तास्थिताब्जोत्पलाम् ॥ रामंदाशरथिंरमाकुचलसद्धस्तंतदास्येक्षणं । कस्तूरीरचनात्सुदक्षिणकरंध्यायेदभिष्ठार्थदम् ॥ ॥ १२ ॥

टी० विदेहतनयां (आप जनकजीकी पुत्री हैं) फिर कैसी हैं तो तप्त (गरमायाहुवा) अष्टापद (सोना) जो है उसके ऐसा आपका भां (चमक–प्रकाश) है फिर आप कैसी हैं तो रामाङ्क पीठस्थिताम् (श्री रामजीके गोदमें आप बैठनेवाली हैं) फिर आप कैसी हैं कि अनिमिषां (वगैर पल गिरेहुए) तस्य (श्रीरामचन्द्रजीको प्रेक्षण (देखनेमें) आप तत्परा (नाम मुस्तैद हैं फिर आप कैसी हैं कि अब्ज उत्पल (जलसे उत्पन्न जो कमल सो] आपके हस्तास्थिताम् (हांथमे हैं) हे रमा (लक्ष्मीजी) आपका जो कुच (स्तनहै) उसपर दाशर थिंरामं (श्रीदशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी का) हस्तं (हाथ) लसत् (बिराजता है) फिर तत् (आपका श्री किशोरीजीका) आस्य (मुख) इक्षणं (श्रीरामजी देखते हैं) फिर श्री रामजी का सुदक्षिणकरं (सुन्दर दहिनाहाथ) मे कस्तूरी रचनात् (लगाहुवा है) उस्को ध्यान करो कैसाहै वह हाथ के सब मन वांछित फलका देनेवाला है श्रीकिशोरीजीके स्तनमे कस्तूरी का शृंगार लगाहुवा है

उसके स्पर्शसे श्रीरामजी के दहिनेहाथ मे कस्तूरी लग गया है ॥ १२ ॥

झलझ्झलितनूपुरसुरन्जितपदायिनीं पीतवस्त्र विलसत्तडितप्रभा कटिम् ॥ कणत्क्वणितकंकणकराम्वुजयुगां रघूद्वह हृदम्वुजेरमतींभजेऽहम् ॥ १३ ॥

टी० भजेऽहम् (हम आपका भजन करताहूं) आप कैसी है कि झलझ्झलित् (चमकीला) नूपुर (पायजेब) उससे सुरंजित (शोभित) पदायिनीं (चरण वाली आपहैं) फिर कटिम् (कमरमें आपके) पीतबस्त्र (पीलारेश्मी कपडा) बिलसत् (शोभताहै) कैसा है रेश्मी कि तडित प्रभा (बिजुली के ऐसा चमकहै जिस्में] फिर कैसीहैं आपा कि कराम्बुज [हस्त कमल] युगां (दोनो] मे आपके कणत्क्वणित (शब्दायमान-झुनझुन बोलने वाला) कंकण (कंगना) है, फिर आप कैसीहैं कि रघूद्वह (रघुकुलके तरकी देनेवाले श्री रामचन्द्रजीके) हृदयं (हृदय) में आप रमतीं (बिराजती हैं) ॥ १३ ॥

अजाण्डवप्रभानन्तयन्त्राधिरूढे

प्रकारांचचिन्मात्रमन्त्राधिवासे ॥
हरिब्रह्मरुद्रादिमृग्यप्रभावे
भजेसन्ततंतारकब्रह्मकान्ते ॥ १४ ॥

टी० हे तारकब्रह्म कांते कांते (हे तारकब्रह्म जो श्री·रामचन्द्रजी उनके आप स्त्री हैं) सततं (हमशे आपका हम) भेजे (भजनकरतेहैं] आपकैसी हैं कि ब्रह्मा बिष्णु महेश बगैरह सबसे आपका प्रभाव (प्रताप) मृग्य (खोजाजाने योग्य है) फिर आपकैसी है के अज (ब्रह्मा और अजांड-ब्रह्मांड) मे प्रभा (प्रकाशबाला) अनन्त (अगणित) यंत्र (जिस चीजपर देवतादि बैठाये जाते है उस्को यंत्र कहतेहै) तो बैसे यंत्र के उपर आप बैठी हैं फिर कैसी है प्रकारांच (बिबिध प्रकार का अंच जोहै पूजा) चिन्मात्र [चैतन्यमात्र ईश्वर श्रीरामचन्द्रजी का] मंत्राधिवासे [जिसमंत्रसे श्रीरामजीका नाना प्रकार का पूजा होताहै उसी मंत्र मे आपका बास है] ॥१४॥

तडिद्दामगात्रेशरच्चन्द्रवक्त्रे कृपापांग नेत्रेत्रिमूर्त्येकमात्रे ॥ शतग्रीवहन्त्रीमहा-

भूतियन्त्रे जगत्सृष्टितन्त्रे नमो राम कान्ते ॥
॥ १५ ॥

टी० हे राम कांते कांते [हे श्रीरामजीकि प्रिया] नमः [आपको नमस्कार है] आप कैसी हैं तडिद्दामगात्रे [आपके अंगमें बिजुली के ऐसा दाम नाम चमक है] शरच्चन्द्रवक्त्रे (शरद काल के स्वच्छ चन्द्रमा के ऐसा मुख है आपका) कृपापांगनेत्रे (आपके आंखमे कृपाका कटाक्ष है) त्रिमूर्त्यैकमात्रे (ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनो आपही है) शतग्रीवहंत्री (शतग्रीवके आप मारने वालीहैं महाभूतियंत्रे (बडाभारी ऐश्वर्य्य रूपीजो एक यंत्र आसन है उसपर आप बिराज मानहै) जगत्सृष्टितंत्रे (दुनियांके आप रचने बालीहैं) ॥१५॥

महारत्नसंछन्नमंजीरनादं स्फुरद्रत्न पङ्केरुहांघ्रिसुगन्धिम् ॥ झणत्किङ्किणीवद्ध कांचीविभूषां भजे संततं तारकब्रह्मकांताम् ॥
॥ १६ ॥

टी० तारक ब्रह्मकांताम् (तारक ब्रह्म जो श्री रमचन्द्र उनके आप प्रिया है) संततं (हमेश) भजे

(हम आपको भजतेहैं) महारत्न (बहुत बेशकीमत जवाहिरात सब) संछन्न (जडाहुवा) मंजीरनादे (शब्दायमान पायजेवमें)सो आपके प्रकाशमान रत्न युक्त और सुगंधिम् (सुन्दर गंध युक्त) पंकेरुहांघ्रि चरनकमलमेंहै) फिर आपकैसीहैं कांची (करधनी) कैसी करधनी के झणत् झुन २ बोलता हुवा किंकिनी (घुंघरू) बद्ध (बंधाहुवा) है जिस्में सो बिभूषां (शोभित है कमर में आपके) ॥१६॥

जगन्मोहनानन्दलावण्यशीले सदा रामपादारविन्दानुकूले ॥ शतग्रीवसंहार कालाग्निकूले नमस्सन्ततंदेविमन्दार मूले ॥ १७ ॥

टी० हे देबि (हे श्रीकिशोरीजी) सततं (हमेशे) नमः (आपको नमस्कार करतेहैं आप कैसीहैं जगन्मोहना (दुनियांको मोहने वालीहैं) आनन्द (आनन्द रूपाहै) लावण्यशीले (आप स्वभाबिक सुन्दर हैं (सदा राम पादारविंदानुकुले (आपहमेशे रामजीके चरनकमल में लगीरहतीहैं: शतग्रीव राक्षस के मारने के लिये आप कालाग्नि

के तुल्य हैं] आप मंदार मूले (पारी जातके आदि कारण हैं) ॥ १७ ॥

वन्देरामाङ्कनिलयां रघुवरवधूंचन्द्र बिम्वोपमास्यां पृथ्वीपुत्रींकनककमला शोभिमाल्याम्वराढयाम् ॥ भक्तैर्नित्यं विनमितपदांपद्मपत्रायताक्षीं नानाभूषां शतविलसितांविद्युदाभांविभूत्यै ॥ १८ ॥

टी० वंदे 'हमबंदना करतेहैं श्री किशोरीजीका' कैसीहै श्री किशोरीजी कि रामांकनिलयां 'श्रीरामचन्द्रजी के गोदमें बैठनेवालीहैं' फिरकैसीहै रघुबर वधूं 'रघुकुल मे श्रेष्ठ जो श्रीरामचन्द्रजी उनकी प्रिया हैं' चन्द्र बिम्वोप मास्याम् 'आसनाम मुखतब चन्द्रमाके सम प्रकाश युक्त मुखवाली हैं' पृथ्वी पुत्रीं 'पृथ्वीकी लडकी हैं श्रीकिशोरीजी' कनककमला 'सोनेका कमल' का शोभिमाल्यां 'सुन्दर माला' आढ्याम् 'पहिरे हुइहैं' भक्तैः 'भक्तोंसे' नित्य 'हमेशे' बिनमित पदां 'पूजितपैरवालीहैं' पद्मपत्रायताक्षी 'कमलके ऐसे बडे२ आंखवालीहैं' नानाभूषां 'अनेकप्रकार के जेवरों से' शतबिलसितां 'सैकडोप्रकार से संवारीहुइ हैं'

विद्युत 'बिजुलीके' आभां 'प्रकाशसम' बिभूत्यै 'शोभाय मान बिराजित' हैं ॥ १८ ॥

तप्तहाटकसंकाशां कोटिचन्द्रसुशीतलाम् ॥ सर्वालङ्कारसंयुक्तां स्फुरन्नूपुर मेखलाम् ॥ १९ ॥

टी० आपकैसी है तप्तहाटक 'गरमसोनाके' संकाशां 'सदृश' कोटिचन्द्र 'करोडोसूर्यके ऐसा' सुशीतलाम् 'ठंढीहै' सर्वा लंकारसंयुक्तां 'सबशृंगार से संवारीहुइहैं' नूपुर 'पायजेब' और मेखलाम 'करधनी' स्फुरत 'बिकसित प्रकाशित शोभताहै' ॥१९॥

रामस्यांकेसमासीनां हेमाम्बुजकराम्बुजाम् ॥ भजतांकामदांनित्यांसर्वभूति सुखावहाम् ॥ २० ॥

टी० रामचन्द्रजीके गोदमें सुन्दर प्रकार से आप बैठी हुइ हैं हस्तकमल में आपके सोने के रंगका पीला कमल है अपने भक्तोंको हमेशेही इच्छित फल देनेवाली है और सब ऐश्वर्य और सुख से आप भरे पूरे हैं ॥ २० ॥

सर्वलक्षणसपन्नां सर्वाभरणविभूषिताम् सर्वलोकेश्वरींदेवीं वन्देश्रीरामवल्लभाम् २१

सबअच्छे गुणोंसे आप युक्तहैं सबगहना पहिरे हुइहैं । आपसब लोककी मालकिनी है देवीहै श्रीरामजी की प्रिया हैं ऐसे जो आप है उनको हम नमस्कार करतेहैं ॥२१॥

अरुणायुतकोटिभासमानां तरुणाम्भोरूहलोचनाभिरामाम् ॥ शरणागत वत्सळांकनिलयां वरुणालयकन्यकां भजेहम् ॥ २२ ॥

टी० प्रातः कालके करोडो सूर्य्यके ऐसा चमक है आपमें खूब खिलाहुवा जो तरूण कमल उस्के ऐसा सुन्दरहै आंख आपका शरणागत वत्सल जो श्रीरामचन्द्र उनके गोदमे बैठने वालीहैं समुद्रकी लडकी लक्ष्मी आपहै ऐसे जो आप उनको हम भजते हैं ॥२२॥

शरच्चन्द्रकोटिप्रभाभासमानां लसद्रत्नताटंकगण्डस्थलाढ्याम् ॥ स्फुरन्मौक्तिकावद्धकेयूरभूषां भजेसंततंतारक ब्रह्मकान्ताम् ॥ २३ ॥

टी० हे तारकब्रह्मकांताम् 'हे श्रीरामजीकी प्रिया सततं ' हमेसे , आपको हम भजे 'भजतेहै, आप

कैसी हैं कोटिशरच्चन्द्र 'करोड़ों शरद रितुके चन्द्रमा के प्रभा ' तेजके तुल्य, भासमानां 'प्रकाश रखनेवाली , लसद्रत्न ' प्रकाशमानरत्न ' ताटंक ' बिजुलीके ऐसा ' गंडस्थ ' गालपर ' लाढ्यम् "युक्तहैं ' स्फुरन् ' चमकीला ' मौक्तिकावद्ध 'मोतीसे बंधाहुआ ' केयूर ' बाजूबन्द ' भूषां ' पहरनेवाली ' आप है।

देवींकाञ्चनदामकान्तिसदृशीं कञ्जातपत्रेक्षणाम् राकाचन्द्रमुखींकरेणदधतीं हेमाम्बुजंलीलया ॥ आसीनांकमलासने सुरुचिरां रामस्यपार्श्वेस्थितां सीतांमातर माश्रयामिभजतांमाङ्गल्यसम्पत्प्रदाम् २४

टी० हे मातर ' माता ' हम आपका आश्रयामी ' आश करते हैं ' आप कैसी हैं सुरुचिरां " बहुत सुन्दर ' कमलासने ' कमलके आसन पर ' आसीनां ' बैठनेवाली हैं ' फिर श्रीरामजी के पार्श्व ' वगल में ' स्थितां ' बैठनेवाली हैं ' फिर कैसी हैं भजतां ' अपने सेवकोंको ' आनन्द और धन देनेवाली हैं फिर आप देवी हैं कांचन 'सोना' के दाम ' चमक ' कांति ' सुन्दरता ' के सदृशीं

तुल्य ' आप हैं कंजातपत्र (कमलपत्र) के ऐसा इक्षण ' आंख है आपका ' राका ' आश्विनके पूर्णमासी के रात ' के चन्द्रमुखी ' चन्द्रमाके ऐसा मुखवाली लीलया ' खेलते २ ' हेम अम्बुजं ' सोनेके रंगका पीला कमल ' करेण दधतीं ' हांथमें आप धारण किये हुये हैं ' फिर आप सीतां ' सीता है ' ॥ २४ ॥

अम्बाम्बुजवासिनींस्मितमुखींहारावळीभूषितां कस्तूरीघनसारचर्चितकुचां क्षौमाम्बरालंकृताम् ॥ रत्नोन्मीलितकुण्डलांरघुवरस्याङ्कसदासंस्थितां वन्देमातरमाश्रयामिभजतां माङ्गल्यसम्पत्प्रदाम् २५

टी० हे मातर ' हे माता ' बंदे आपको नमस्कार करता हूं ' आश्रयामि ' आपका आश करते हैं ' आप कैसी हैं कि अपने दासोंको आनन्द और धन देनेवाली हैं हे अम्ब ' माता ' आप अम्बुजवासिनीं ' कमलमें बास करनेवाली आप हैं ' स्मितमुखीं ' आप हँसमुख हैं ' हारकी अवलीं ' समूह ' पहिरे आप शोभित हैं केसर कस्तूरी आपके स्तन में लगा हुवा है और क्षौम अम्बर ' पवित्र वस्त्र ' से अलंकृत ' शृंगार किये हुइ

आप हैं ' रत्नोन्मिलित ' रत्न जडित् ' कुण्डलां ' कुण्डल धारन करनेवाली आप हैं ' श्री राघव-जीके गोदमें आप वैठनेवाली हैं] ॥ २५ ॥

विद्युत्पुञ्जनिभामलाङ्गरुचिरा चाम्पेयचापोज्वलां चन्द्रादित्यकिरीटमण्डित लसत्पिताम्वरालंकृताम् ॥ रामांकल्पित वैभवांपरिलसत्पिताम्वरालंकृताम् देवीं-शोकहरांभजामिसततं सौभाग्यसम्पत्प्रदाम् ॥ २६ ॥

टी० हे देवीं ' हे सीताजी ' सततं ' हमेशे ' आपको हम भजते हैं आप कैसी हैं विदयुत् ' विजुलीके चमक ' के पुंज ' ढेर ' के निभ ' तुल्य ' आप हैं अमलांग ' देह आपका अमल स्वच्छ हैं ' आप ' रुचिरां सुन्दर हैं ' आप कैसी हैं चाम्पेय ' चम्पाके फूलका ' उज्वलां ' सफेद ' चाप ' धनुष धारण किये हैं ' कामदेव फूलके धनुष बाणसे जगतको मोहता है श्री किशोरीजी चम्पा के फूलके धनुष बाणसे श्रीरामजीके मनको हरण करती हैं सूर्य चन्द्रमाके प्रकाशयुक्त मुकुट आप पहिरे हुई हैं लसत् 'चमकीला' पीताम्वरसे सँवारीहुइ आप

हैं ' आप रामां [श्रीसीताजी रामां नाम सुंदर स्त्री है ' कल्पित वैभवां ' ऐश्वर्य सब आपका रचा हुवा है परिलसन् ' चमकीला ' मंदारमाला न्वितां ' मंदारपुष्पका माला आप पहिरेहुई हैं ' आपशोकहरां ' शोक दूरकरने वाली हैं' एकवाल और धनके देनेवाली हैं ॥ २६ ॥

सीतांचारुशुभेक्षणांजनकजांरामस्य संगस्थिताम् कांचीकंकणहारनूपुरलस-त्कर्णावतंसोज्वलाम् ॥ जातीचम्पककेत-कीविरुचितां स्निग्धजांबूनदाभां देवीं शोकहराम् भजाम्यिसततं सौभाग्यसम्प-त्प्रदाम् ॥ २७ ॥

टी०हे देवी शोक दूर करनेवाली हमेशे आपको हम याद करते हैं आप एकवाल और धनकीदेने वाली हैं आप सीता हैं सुन्दर और शुभ आंख वाली आप हैं श्रीजनकजी की आप लड़की हैं श्रीरामचन्द्रजी के संग रहनेवाली हैं करधनी कंगना हार नूपुर 'पायजेबसे' आप शोभायमान हैं और कानका स्वच्छ अवतंस ' भूषण ' आप धारन किये हुए हैं जाती चम्पक केतकीके

फूलसे आप शृंगार किये हुए हैं जांबूनद 'सोना' के ऐसा आप स्निग्ध 'चिकना' और आभां 'प्रकाशवाळी हैं' ॥ २७ ॥

**सकलभुवनभूमीं योगिभिःस्तूयमा-
नांविलसितकरपद्मांरामपार्श्वेनिविष्टाम् ॥
तवचरनसरोजे भक्तिहीनंदयालो परम
करुणयात्वंरक्षमांत्वंभजेऽहम् ॥ २८ ॥**

टी० चौदहों भुवनके भूमीनाम उत्पतिस्थान योगियों से आप स्तुतिकिये गये हैं आपके कमलवत हाथपैर सुन्दर हैं श्रीरामचद्रजीके बगल में आप वैठनेवाली हैं हे दयाल आपके चरन कमलके भक्तिसे मैं हीनहूं वहुत दयासे आप हमारी रक्षा कीजिये मैं आपका भजन करताहूं।

**शरदिंदुविकाशमन्दहासामरविन्दा-
यतलोचनांभिरामाम् ॥ सुरवृन्दाकिरीट
पादांरघुवंशोद्भवसुन्दरीम्भजेऽहम् ॥ २९
इति ब्रह्मस्तुतिः ॥**

टी० मंदहासाम् (मुस्कुराना आपका) शरद-इन्दु 'शरदरितुके चन्द्रमाके किरनकेऐसाप्रकाश मान है' कमल के ऐसा आपकी बड़ी२ आंख

सुन्दर है देवताओंके समूहका मुकुट आपके पैर पर गिराहै रघुकुलमेंजो उत्पन्न श्रीरामजी उनकी आप प्रिया हैं ऐसे जो आप हैं उनको हम भजतेहैं ॥२९॥ इतना श्रीब्रह्माजीने स्तुति किया

अथशिवस्तुतिः ॥ वन्देरामांकनिलयांकरधृतकमलां चारुहासांसुनासां चन्द्राभांकम्बुकंठीस्फुरितकचभरां पुष्पकोदंडहस्ताम् ॥ सर्वालंकारदीप्तांमणिमयमुकुटांदिव्यमालाम्बराढ्यां देवींकरनांतनयनामाश्रितदुरितहराम् रत्नसिंहासनस्थाम् ॥ ३० ॥

टी० श्रीसीता जी को हम नमस्कार करते हैं श्रीराम जी के गोदमें आप बैठनेवाली हैं कमल आपके हाथ में है सुन्दर आपका मुस्कुराना है आपका नाक सुन्दर है चन्द्रमाका प्रकाश आप में है शंखके ऐसा कंठ आपका है सुन्दर आपके कच (केश) चमकीले हैं आपके हाथमें फूल है सब प्रकार के श्रृंगार से आप युक्त हैं मणिमय मुकुट आप पहिरे हैं सुन्दर माला आप पहिरे हैं हे देवि आपके बड़े २ नेत्र हैं अपने आश्रय

वालों के दुख को आप दूर करती हैं रत्नके सिंहासन पर आप बैठी है ॥ ३० ॥

वन्दे श्रीरामकान्तांस्तनभरनमितां दिव्यहेमाम्बराढ्याम् नानालंकारयुक्ताम भयवरकरांपद्मसिंहासनस्थाम् ॥ योगीन्दैर्मुनिमानसाऽब्जनिलयांब्रह्मादिसंसेवितांकारुण्यामृतवीक्षणांसुनयनांकल्याणसम्पत्प्रदाम् ॥ ३१ ॥

टी० श्रीरामजी के प्रियाको हमनमस्कार करते हैं आप कैसीहैं कि स्तनके बोझसे आप नमितां (झुकी) हैं सुन्दर सोनेके रंगका पीला कपडा ओढे आप हैं बहुत प्रकार से आप शृंगार किये हैं अभयवरकरां (अभयदानदेनवाली आप हैं) कमल के सिंहासन पर आप बैठनेवाली हैं योगी, और मुनि लोगके हृदय कमलमें आप निवास करने वाली हैं ब्रह्मा वगैरह आपका सेवा करते हैं करुणा दया रूपी अमृत से आपका नजर भरा हुआहै सुन्दर आंख आपका कल्याण और धनके आप देनेवाली हैं ॥ ३१ ॥

विद्युद्भासांसुभागींविपुलकटितटींपद्म

पत्रायताक्षी मुद्यद्ररत्नकिरीटकुण्डलधरां सुस्निग्धमन्दस्मिताम् ॥ विद्यावेद्यमयींविचिन्त्यविलसद्भूतिप्रदाम्भासुरां ध्याये श्रीरामकान्तांहरिहरब्रह्मादिभिस्सेविताम् ३२

टी॰ श्रीरामजीकी प्रिया जो श्रीकिशोरीजी उनको ध्याये (ध्यान करो) कैसी है तो विद्युद्भासां (बिजुलीके ऐसा प्रकाश है उनमें) सुभाङ्गीं (अंग उनके शुभ है) बिपुल कटि तटीं (आपके नितम्ब buttock बड़े हैं) कमलके पत्रके ऐसे बड़े २ आपके आखें हैं) क्रीट और कुंडल उद्यत् (चमकीले) रत्नका जो बना हुवा है उसको आप धारन करने वाली हैं थोड़ा २ आप मुस्कुराती हैं विद्यावेद्य [विद्या से जो जानेजाय नारायण श्रीरामजी में आप मय हैं) विचिंत्य बिलसत् भूति प्रदाम् (जो विभूति ऐश्वर्य्यका चिंत्वन सब कोई करताहै अर्थात् जिस ऐश्वर्य्यको सब कोई चाहता है उस विभूतिको आप देनेवालीहैं ॥ भासुरां (आप प्रकाशमान है) फिर आप कैसी हैं ब्रह्मा विष्णु महेश वगैरह सबसे आप सेवित हैं ॥ ३२ ॥

श्रीमच्चन्दनचर्च्चित्तोन्नतकुचांसाचीतमा-

ल्याम्वरां ताटङ्कद्युतिसत्कपोलयुगळांग्रैवे-यकालंकृताम् ॥ काञ्चीकङ्कणहंसिकाझण झणत्मञ्जीरपादाम्वुजां श्रीरामाङ्कगतांसरो-रुहकरांदेवींभजेजानकीम् ॥ ३३ ॥

देवीं जानकीं भजे [श्रीजानकीजी जो देवी है उनका भजन करो] कैसी है श्रीकिशोरीजी उन्नत कुचां [बड़े २ उनके स्तन है) उसमें मलयागिर चंदनसे चित्रकारी कृत शृंगार किया हुवाहै तमाल रंग श्याम रंगका अम्बर कपड़ा धारण किये हुये हैं सत्कपोल सुंदर गाल जो आपके हैं दोनों उसमें ताटंक बिजलीका चमक है ग्रैवेयक (कंठका भूषण) से अलंकृत है नाम पहिरे हैं कांची [करधनी] कंकण [कंगना] हंसिका [पैरका कड़ा] झणझनत् [शब्दायमान झुन२ बोलनेवाला] मंजीर [पायजेब] चरण कमलमें आपके है] श्रीरामजीके गोदमें आप बिराजमान है और कमलवत् कोमल हाथ आपके है अथवा हाथमें कमल धारण किये हुये हैं ॥३३॥

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्वरा लंकृताम् । गौरांगीशरदिंदुसुन्दरमुखीं वि स्फारविंवाधराम् ॥ कारुण्यामृतवर्षिणींह

रिहर ब्रह्मादिभिर्वंदिताम् । ध्यायेभक्तजने प्सितार्थफलदां रामप्रियांजानकीम् ॥३४॥

आपका नयन काले कमलके दलके ऐसा सुंदर हैं काला कपड़ा आप धारण किये हुई हैं। आप गोर रंगकी हैं चन्द्रमाके ऐसा सुंदर आपका मुख है विस्फोर [लहलहाताहुआ ताजा] बिंबाफल [तिल- कोडा जो बहुत लाल होताहै वैसही आपका ओठ लाल है दयारूपी अमृतका आप बर्षा करती हैं ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनों आपका सेवा करते हैं अपने भक्तोंको आप इच्छित फल देतीहैं हे रामजी की प्रिया श्रीजानकीजी आपको याद करतेहैं॥३४॥

सीतामुत्फुल्लपंकेरुहकलितकरांराघवस्यां कदेशेराजंतीराजराजाप्रियनुतिविभवांराज विंवोपमास्याम् ॥ विश्वानंदकरींविबुधयुव तिभिस्सेव्यमानांसमंताद्वैदेहींभावयेहंहृद येसरसिजेतत्वविज्ञातरूपाम् ॥ इति शिव स्तुतिः ॥ ३५ ॥

सीताजी कैसीहैं कें उत्फुल्ल जो खिलाहुवा कमल है उनके हाथमें कलित नाम प्राप्त है श्रीरामजीके गोदमें स्थानहै उनका वहां वह बिराजतीहैं राजोंके

राजा जो श्रीरामजी उनका नुति (स्तुति-तारीफ)
श्रीकिशोरीजीका प्रिये विभवहै(ऐश्वर्य्यहै) राज विंब
[अति उत्तम तिलकोढ़ा बहुत लाल उस्के उपमा
नाम तुल्य आस नाम मुखहै श्रीसीताजीका अर्थात
ओंठ लाल है) जगत्को आनन्द देनेवालीहैं बिबुध
(देवता)के स्त्रियोंसे समता (चारोतरफ) आप सेवा
की जाती हैं योगियोंके हृदय कमलमें आप विशेष
ज्ञानका जो तत्व है उस रूपसे आप बिराजमानहैं
ऐसी जो आप हैं उनका हम ध्यान करतेहैं ॥३५॥

अथ विष्णुस्तुतिः ॥ सुरत्नप्रभापुंजमंजीर
भासां जपापुष्पशोभालसत्पद्महस्ताम् ॥
शरच्चन्द्रिकाचारुमंदास्मितास्यां भजेसंततं
तारकब्रह्मकान्ताम् ॥ ३६ ॥

अब बिष्णु स्तुति करतेहैं मंजीर भासां [पायजेब
का चमक आपके] सुरत्न बढ़िया२ जो रत्न उस्का
ढेर उस्के तेजके समान हैं हस्त कमलमें आपके
जपा पुष्प (उडहुलका फूल) के लालीका शोभा है
अर्थात् हाथका तलहथी लाल है शरदऋतुके रात्रि
के स्वच्छ चन्द्रिका (चादनीके ऐसा आपकी हंसी
मुस्कुरानाहै श्रीरामजीके प्रियको हमेशे हम भजतेहै

अष्टादशभुजांदेवीं चन्द्रसूर्य्याग्निलोच नाम् ॥ शतग्रीवमहादैत्य मर्हिनींराघव प्रियाम् ॥ ३७ ॥

श्रीकिशोरीजी दुर्गाजीके अवतारहै श्रीविष्णुभगवान स्तुति करते हैं कि हे जानकीजी आप आठ भुंज वाली देवी है दुर्गाजीको तीन नेत्रं हैं सो हे श्री जानकीजी चन्द्रमा सूर्य्य और अग्नि तीनों आपके आंख है शत ग्रीव भारी दैत्यके आप मारनेवाली है श्रीरामजीकी प्रिया हैं ॥ ३७ ॥

महावीरघोरप्रतापाट्टहासां स्फुरत्कोटिदैत्ये न्द्रमत्तेभयुक्ताम् ॥ शतग्रीवकालानलज्वा लशांतिं त्वदन्योनशक्तस्समस्तैकदेवि ॥ ३८ ॥

श्रीनृसिंहजीमें जो तेज है सो श्रीकिशोरीजी हैं विष्णु कहते हैं कि हनुमानजीका जो बड़ा भारी प्रतापहै सोई आपका हंसीहै करोडों दैत्यका राजा जो हिरनकश्पुरूपी जो मत्त इभ हाथीहै उस्के मार ने में आप मुस्तैदगीसे युक्त है हे समस्तैक देवी शतग्रीवरूपी जो प्रलय कालकी आग्नि उस्के शांति (बुझानेमें) त्वत् (आपको छोडके) अन्यः दूसरा कोई नशक्तः समर्थ नहीं है ॥ ३८ ॥

हरिहरकमलासनादिमूर्ति तवकरुणावर लब्धमंगलम् ॥ रघुबरनरबल्लभेत्वदीयम गणितधनवैभवंनजाने ॥ ३९ ॥

कमलासन (ब्रह्मा) बिष्णु महेशके ऐश्वर्य्यको हम नहीं जानते नाम प्रवाह नहीं करते काहेकी आप का दयारूपी जो मंगल बर है सो हम पाया है आपका अगनित धन ऐश्वर्य्य है हम इस कारण दूसरे किसीके धन ऐश्वर्य्यका क्या परवाह करते। आप श्रीरामेजीके श्रेष्ठ प्रिये है ॥ ४० ॥

हेमाभामम्बुजकरांरामालोकानतत्पराम्॥ ध्यायेत्प्रसन्नवदनां देवींरामांकसंस्थिताम् ४

सोनेके ऐसा चमक है आपमें कमलवत् कोमल है हाथ आपका श्रीरामजीके आलोकन नाम ताकनेमें आप मुस्तैद हैं आप प्रसन्न चित वाली है देवी हैं श्रीरामजीके गोदमें बैठनेवाली आप हैं ऐसे जो आप हैं उनका हम ध्यान करते हैं ॥

अथब्रह्मनमस्कारः ॥ यक्षकिन्नरगंधर्व सिद्धविद्याधरैस्सदा ॥ सेव्यमानपदाम्भोजां वन्देश्रीरामवल्लभाम् ॥ ४१ ॥

हे श्रीरामचन्द्रजीकी प्रिया आपको हम नमस्कार

करते हैं आप कैसी हैं यक्ष किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्यावर वगैरह हमेशे आपके चरण कमलको सेवे हुये हैं ॥ ४१ ॥

चन्द्रमण्डलमध्यस्थां चन्द्रविम्वोपमाननम् ॥ चन्द्रकोटिप्रभांदेवीं वन्देश्रीरामवल्लभाम् ॥ ४२ ॥

चन्द्रमंडलके मध्यमें आप बिराजमानहैं चन्द्रमा का जो मंडल उस्के ऐसा है मुख आपका हे देवी करोडों चन्द्रमाके ऐसा चमक है आपमें श्रीरामजी के प्रियाको हम नमस्कार करते हैं ॥

विद्युत्पुञ्जप्रभाभासां सुरासुरनमस्कृताम्। त्रयीमयींसूक्ष्मरूपां वन्देश्रीरामवल्लभाम्॥

बिजुलीके ढेरमें जो प्रकाश सो प्रकाश आपमेंहै देवता और राक्षस आपको नमस्कार करतेहैं यत्री-मयीं (ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनों रूप आपहैं) सूक्ष्म रूपां (सूक्ष्मरूप आप हैं) श्रीरामजीके प्रियाको हम नमस्कार करते हैं ॥ ४३ ॥

स्वेतपद्मसमासीनां स्वेतपद्मकराम्बुजाम्। माल्याम्वरधरांदेवीं वन्देश्रीरामवल्लभाम्४४

उजले रंगके कमल पर आप बैठी हुईहैं उजला

कमल आपके कर कमलमें है। उजलेही कमलका माला आप धारण किय हुये हैं श्रीरामजीके प्रिया को हम नमस्कार करते हैं ॥ ४४ ॥

आदिमध्यान्तरहिता मम्भोरुहनिवासिनीम्
नादब्रह्ममयींदेवीं वन्देश्रीरामवल्लभाम् ॥४५

आदि मध्य और अन्त आपमें नहीं है अर्थात् यह कोई नहीं जानता कि आपकी उत्पत्ति कब हुई मध्य कब हुइ और आपकी समाप्ति कब होगी आप कमलमें बास करनेवाली हैं शब्द ब्रह्म मय आप हैं हे देवी श्रीरामजीकी प्रिया आपको हम नमस्कार करते हैं ॥ ४५ ॥

ब्रह्मेन्द्रवंदितपदां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी
म्।परानंदमयींदेवीं वन्देश्रीरामवल्लभाम्४६

ब्रह्माइन्द्रसे चरण आपका वंदित है सृष्टि आप करती है पालन और संहार आप करती हैं परम आनन्दमय आप हैं हे देवी आप श्रीरामजीकी प्रिया हैं आपको हम नमस्कार करता हूं ॥४६॥

पद्मासनांपद्महस्तां पद्मपत्रनिभेक्षणाम् ॥
पद्मालयांपद्मगंधां वन्देश्रीरामवल्लभाम्४७।

कमल आपका आसन है कमलवत् कोमल हाथ

है आपका कमल के पत्ते के ऐसा नेत्र है कमल स्थान है आपका कमलका गंध [खूशबू] आपमें है ऐसे श्रीजानकीजीको हम नमस्कार करतेहैं॥४७॥

पद्मप्रियांपद्मशोभां पद्मिनिपद्ममाळिनीम्
पद्महस्तांपद्मपदां वंदेश्रीरामवल्लभाम् ४८

कमल आपका प्रिय है कमलका शोभा आपमें है आप पद्मिनि है कमलका माला आप धारण करनेवाली है कमलवत् कोमल आपका हाथ और पैर है श्रीरामजीके प्यारीको हम भजते हैं ॥४८॥

हेमपद्मासमासीनां नीलकुञ्चितमूर्द्धजाम्।
तरुणादित्यसंकाशां वंदेश्रीरामवल्ळभाम्

सोनेके रंगके कमल पर आप बैठी हुई है नील (काला) कुंचित [टेढ़ा] आपके मूर्द्धज [केश] है तरुण नाम खूब फूले कमलके तुल्य आप हैं श्री रामजी की आप प्रिया है आपको हम नमस्कार करते हैं ॥ ४९ ॥

दिव्यमाल्यावरधरां तप्तचामीकरप्रभाम्।
चारुचंद्राभवदनीं वंदेश्रीरामवल्लभाम् ५०

सुंदर माला आप धारन किये हैं आगपर लाल कियाहुवा सोनेका तेज आपमें हैं चन्द्रमाके प्रकाश

आपके मुखमें है श्रीरामजीके प्रिया आप हैं आप को हम नमस्कार करते हैं ॥ ५० ॥

विदेहतनयांदेवींमंदास्मितमुखाम्वुजाम् ॥
इन्दीवरविशालाक्षीं वंदेश्रीरामवल्लभाम्

हे देवी आप श्रीजनकजीकी पुत्री हैं आपका मुख कमलमें थोड़ी २ मुस्कुराहट है कमलके ऐसा बड़ा नेत्र आपका है श्रीरामजीके प्रियाको हम नमस्कार करते हैं ॥ ५१ ॥

रामांराजिवनयनांरामवक्षस्थलालयाम् ॥
रामांकपीठेराजंतीं वंदेश्रीरामवल्लभाम् ॥

आप सुंदर स्त्री हैं (रामा) कमलके ऐसा नेत्र है आपका श्रीरामजीके वक्षस्थलमें आप बास करती है श्रीरामजीके गोदमें आप विराजतीहैं श्रीरामजी के प्रियाको हम नमस्कार करते हैं ॥ ५२ ॥

अथशिवस्तुतिः ॥ कर्पूरमिश्रहरिचंदन चर्चितांगीकारुण्यपूर्णकमनीयकटाक्षशोभे अम्वत्वदीयचरणाम्वुजमाश्रयेहं रामांक पीठनिलयेरमणीयवेषे ॥ ५३ ॥

शिवजी स्तुति करते हैं हे अम्बे माता आपके

चरण कमलके आश्रयसे हम रहते हैं आप कैसी हैं कपूर और मलयागिर चंदन आपके अंगमें लगा हुआ है दया से पूर्ण अति शोभायमान कटाक्ष ताकना आपकाहै आप श्रीरामजीके गोदमें बैठने वाली है आपका सुन्दर वेष है ॥ ५३ ॥

सुरनिकरवरकिरीटरत्नद्युतिविराजितांघ्रि कमले ॥ रघुवरसुंदरीत्रिनेत्रे त्रिभुवनभूतिकरेप्रसीदमह्यम् ॥ ५४ ॥

श्रेष्ठ देवताओंके समूहका रत्न जड़ित क्रीट आपके चरण कमल पर बिराजती है श्रीरामजीके आप श्रेष्ठ स्त्री है आपके तीन नेत्र हैं तीनों भुवनके आप ऐश्वर्य्यके देनेवाली हैं हम पर दया कीजिये ॥५४॥

श्रीरामवक्षस्थलराजितालये शीतांशुविम्बद्युतिमंदहासे ॥ त्रिकालरूपत्रयभासमानेत्वंवैप्रसीदरघुनंदनवल्लभेमाम् ५५

श्रीरामजीके वक्षस्थलमें आप विराजती हैं थोड़ा २ मुस्कुराना आपका जो है सो शीतांशु (चन्द्रमा) के विंव (मंडल) के प्रकाशके ऐसा उसमें प्रकाश है॥ आप भूत भविष्य और वर्त्तमान तीनों रूप हैं और तीनो कालमें तीन मूर्त्ति ब्रह्मा विष्णु महेशसे आप

विराजती हैं त्वं आप वै (जरूर) प्रसन्न होइए हे श्रीरामजीकी प्रिया ॥ ५५ ॥

मंदारवृन्दतरुमूलमहासुरत्न सिंहासनेकनकमण्डपमध्यसंस्थे ॥ ब्रह्मादिदेवमुकुटाञ्चितपादपीठे देवीप्रसीदरघुनन्दनवल्लभेमाम् ॥ ५६ ॥

मन्दार पुष्पके पेडके जडमें बढियां २ सुन्दर रत्न के सिंहासन पर सोनेके मडवेमें आप बैठी हैं। ब्रह्मा वगैरहका मुकुट आपके पादपीठ (जिस चीज पर पांव रहता है उसको पादपीठ कहते हैं खड़ाऊँको भी पादपीठ कहते हैं) पर गिरा है हे देवी हे श्रीरामजीकी प्रिया हम पर प्रसन्न होइए ५६

नागाष्टयुक्तवरमौक्तिकपीठसंस्थेनागाधिपादसुरपूजितपादपद्मे ॥ नागात्मकेसगुणनिर्गुणभासमाने देविप्रसीदरघुनंदनवल्लभेमाम् ॥ ५७ ॥

टी० आठो नागके सहित मोतिके श्रेष्ठ सिंहासन पर आप विराजमान हैं आपका चरण कमल नागोके राजा और देवतासे हे देवी पूजित हैं।

आप नाग रूप हैं सगुण और निर्गुण दोनों रूपसे आप प्रकाशमान हैं हे श्रीरामजीकी प्रिया आप प्रसन्न होइए ॥ ५७ ॥

मंजीररत्नपरिशोभितपादपद्मे मंदारचम्पकविराजितमाल्यभूषे। कंजातपत्रकमनीयबिशालनेत्रे देवीप्रसीदरघुनदनवल्लभे माम् ॥ ५८ ॥

टी० आपके चरण कमलमें रत्नका पायजेव शोभायमान है मन्दार और चम्पाके फूलका माला आपके गलेमें शोभायमान है। आपकी बडी २ आंखें सुन्दर कमलके पत्तेके ऐसी है हे देवी हे श्रीरामजीकी प्रिया प्रसन्न होइए ॥ ५८ ॥

माणिक्यमंजीरपदारविंदां रामार्कसम्फुल्लमुखारविंदां। सर्वार्थदानोद्यतपाणिपद्मांदेवींभजेराघववल्लभेमाम् ॥ ५९ ॥

आपका मुख कमल श्रीरामचन्द्र रूपी सूर्यसे खिला हुवा है। आपका हस्त कमल सब अर्थके दान देनेको उद्यत (मुस्तैद है) हे देवी हे श्रीरामजीकी प्रिया आपको हम भजते हैं ॥ ५९ ॥

इति श्रीमार्कण्डेय संहितायां हरिहरब्रह्मादि प्रोक्त श्रीजानकी नवरत्न माणिक्य स्तवो नामपञ्च-दशोध्यायः समाप्तः ॥